ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

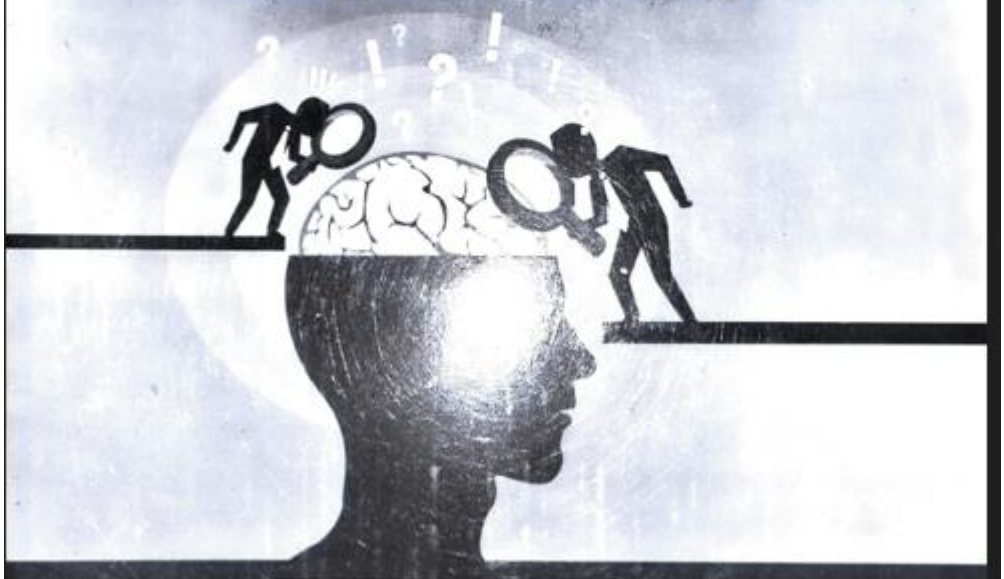

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

वर्ष : 11 अंक : 1 जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. [illegible] अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ऑन्टारियो
डॉ. रमा शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. [illegible]
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. [illegible]
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. [illegible] सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

For Publication Contact us
E-mail-editorialindia1@gmail.com
delhijournals1@gmail.com
Mob-8791628959,9472828959

संपादकीय **सम्पर्क:**

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610

e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं

डॉ० पूर्णिमा आर

सहायक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, श्री शंकरा विद्यापीठ कालेज, पेरुंबावूर, केरल

प्रकृति, पर्यावरण, समाज और संस्कृति एक दूसरे के महत्वपूर्ण अंग है। वे एक दूसरे से अभिन्न और संबद्ध है। मानव प्रकृति और पर्यावरण के बीच [illegible] लेता है एवं प्राकृतिक तत्व ही मनुष्य जीवन का कारण, आधार और ऊर्जा बनते हैं। मानव जीवन प्रकृति दत्त है इसलिए अपने तक सीमित रहकर [illegible] नहीं सकता चूंकि प्रकृति जीवन के केन्द्र में है। कालांतर में प्रकृति और मनुष्य के बीच लगातार संबंधों का सूत्र स्थापित होने लगा जो बढ़ता गया और [illegible] मानव इसके साथ जुड़ते गए जिसके फलस्वरूप समाज का स्वरूप निर्मित होने लगा साथ ही संस्कृति भी पनपने लगी। प्रकृति के बाह्य तत्वों से [illegible] जुड़ाव के एहसास ने उसे सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना के लिए आधार प्रदान किया। प्रकृति के अंतरंग और बाह्य साधनों के और [illegible] के जुड़ाव के फलस्वरूप मनुष्य सामूहिक बनता गया एवं आजीविका, खानपान, वस्त्र अलंकार, आवासऔर जीवन मूल्यों की ओर अग्रसर होते हुए [illegible] की सभ्यता तक पहुंच गया। मानव एकओर अपनी जरूरत के साधनों को रचता गया दूसरी ओर प्रकृति के योग से रचित होता गया। रचने रचाने [illegible] प्रतिक्रिया में उसने प्रकृति पर भी प्रहार किया। प्रकृति, प्राणी, वनस्पति जैसे जैविक और अजैविक कारकों के योग को पर्यावरण कहा जाने लगा।

पर्यावरण एक समग्र सांस्कृतिक, भौगोलिक और सामाजिक तत्व है। बचपन से ही मनुष्य उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने के साथ-साथ उसको [illegible] अनुकूल ढालने और अपने को उसके अनुकूल ढालने की प्रक्रिया में जुड़ गया। व्यक्ति का अपने पर्यावरण के प्रति भावनात्मक जुड़ाव रहता है, [illegible] रहती है और किसी पर्यावरण विशेष का अंग होने की अनुभूति उसके आनंद का कारण बनती है। पर्यावरण से व्यक्ति की अस्मिता भी जुड़ी होती है [illegible] के व्यक्तित्व और पर्यावरण का घनिष्ठ संबंध है। उसका बाह्य व्यक्तित्व निरंतर पर्यावरण के संपर्क और प्रतिक्रिया में आता है और आंतरिक व्यक्तित्व [illegible] मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव डालता है। किसी व्यक्ति की अभिरुचि, अवस्थिति, अनुभूति, चिंतन, व्यवहार आदि को जानने केलिए उसके पर्यावरण [illegible] डालने की जरूरत होती है। इस प्रकार पर्यावरण जैविक अजैविक कारकों तक सीमित न रहकर मानव व्यक्तित्व पर भी प्रभाव डालता है। इसलिए [illegible] में किसी भी प्रकार के असंतुलन का प्रभाव मानव मनोविज्ञान पर भी असर करता है।

मानव सामाजिक प्राणी होने के नाते सामाजिक पर्यावरण उसके लिए अत्यंत प्रमुख बन जाता है। भारत के प्राचीन ऋषियों ने राष्ट्र एवं विश्व [illegible] को सुदृढ़ बनाने के लिए नानारूपात्मक पदार्थों के अंदर उपस्थित एकरूपता की खोज कर उसके आधार पर मनुष्य की वैयक्तिक तथा सामाजिक [illegible] सामाजिक पर्यावरण को स्वस्थ और पवित्र रखने के लिए मानसिक पर्यावरण और बौद्धिक पर्यावरण का गठजोड़ अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब ये दोनों [illegible] ठीक रहते हैं तब तक सामाजिक पर्यावरण भी ठीक ही रहता है। जब इनमें उतार-चढ़ाव आता है तो सामाजिक पर्यावरण बिगड़ता है- मानसिक [illegible] के अंतर्गत मन में उठनेवाले विचार, शडदोष, भावना आदि आते हैं जिसके असंतुलन का सीधा असर मन पर पड़ता है और मन निरपेक्ष रूप से [illegible] असमर्थ हो जाता है। इसे मानसिक पर्यावरण प्रदूषण कहा जा सकता है। जब मन काम करने में असमर्थ होता है तो इसका असर बुद्धि पर पड़ता है [illegible] बौद्धिक पर्यावरण भी बिगड़ता है।

अद्यतन समाज अर्थ केंद्रित हो गया है। वह सब कुछ अर्थ के तराजू पर तोलता है और अर्थ उसे भौतिक सुख प्रदान करता है। आज भौतिक सुख [illegible] तलाश ही जीवन का लक्ष्य बना हुआ है। भोगों की प्राप्ति को जीवन का एकमात्र मूल्य मान लिया जाता है जिसके फलस्वरूप सुखवादी जीवन [illegible] जन्म हुआ है जो प्रकृति के संसाधनों को दुहकर उत्पादन करता है, बाजार में बेचता है और खपत करता है। मांग और खपत में समीकरण स्थापित [illegible] लगता है। मांग के साथ खपत और खपत के साथ मांग बढ़ती ही रहती है और उसके साथ पर्यावरण की क्षति और सामाजिक पारिस्थितिकी का [illegible] शुरू होता है। योग्यता और सफलता को, भोग के लिए साधनों को जुटाने के सामर्थ्य से नापा जाने का जमाना आ पहुंचा है। इस परिस्थिति में [illegible] सुख शांति की उपलब्धि की परिभाषा ही बदल गई। हमारे समाज में जहां भोग और योग का समन्वय हुआ करता था,आज पश्चिम की संस्कृति [illegible] पकड़ मजबूत की और हमारी नई पीढ़ी को सुख-सुविधा, भोग, हिंसा, उन्माद, विवेक शून्यता आदि से प्रेरित अपसंस्कृति की ओर धकेल दिया [illegible] कारण समाज में नैतिक मूल्यों की गिरावट देखी जाती है। भारतीय समाज में एक समय भूमा का सुख था जो प्रकृति पर निर्भर था। अब [illegible] पृथिव्या: वाली भावना विलुप्त हो गयी है। केवल दोहन की योजनाएं बाकी हैं। मनुष्य और प्रकृति का रिश्ता भोग की वस्तु और उपभोक्ता का [illegible] कर रह गया है। यह एक तरह से बाजारू रिश्ता है जिसपर आत्मीयता और सामाजिकता का कोई भाव ही नहीं है। इस तरह के संबंध [illegible] मानसिक और बौद्धिक पर्यावरण पर असर पड़ा है जिसका सीधा प्रभाव सामाजिक पर्यावरण पर दिखाई देने लगा है। हम आज जिस [illegible] सामाजिक संस्कृति और पर्यावरण की ओर अग्रसर हो रहे हैं उसमें स्वार्थ, व्यक्तिवाद, धनलिप्सा और प्रतिस्पर्धा के तत्व काम कर रहे हैं। [illegible] विचार और जीवन दर्शन इसमें अपनी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। किसी भी प्रदूषण से पहले मानसिक प्रदूषण होता है। मन हमारे अंदर शक्ति [illegible] है, वही कर्म और ज्ञान का केंद्र है। मन जब प्रदूषित होता है तो विचारों में दूषित भावनाएं उत्पन्न होती है। मनुष्य की मानवीयता नष्ट हो रही है [illegible]